❍ 04 / 09 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗बेहद की विश्व सेवा की भावना रखी ?∗

➢➢ ∗ज्ञान और भावना का बैलेंस रखा ?∗

➢➢ ∗आत्मा, परमात्मा और प्रकृति तीनो के ज्ञान को अच्छे से समझा ?∗

➢➢ ∗आत्माओ को हिम्मत दे आगे बढाया ?∗

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ ∗जब आप अपनी बीजरूप स्थिति में स्थिति रहेंगे तो अनेक आत्माओं में समय की पहचान और बाप की पहचान का बीज पड़ेगा। अगर बीजरूप स्थिति में स्थित न रहे सिर्फ विस्तार में चले गये तो ज्यादा विस्तार से वैल्यु नहीं रहेगी, व्यर्थ हो जायेगा∗ इसलिए बीजरूप स्थिति में, बीजरूप की याद में स्थित हो फिर बीज डालो। फिर देखना उस बीज का फल कितना अच्छा और सहज निकलता है।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं पद्मापद्म भाग्यवान हूँ"*

〰✧ अपने को पद्मापद्म भाग्यवान समझते हो? हर कदम में पद्मों की कमाई जमा हो रही है? तो कितने पद्म जमा किये हैं? अनगिनत हैं? *क्योंकि जानते हैं कि जमा करने का समय अब है। सतयुग में जमा नहीं होगा। कर्म वहाँ भी होंगे लेकिन अकर्म होंगे। क्योंकि वहाँ के कर्म का सम्बन्ध भी यहाँ के कर्मे के फल के हिसाब में है। तो यहाँ है करने का समय और वहाँ है खाने का समय।* तो इतना अटेन्शन रहता है? कितने जन्मों के लिये जमा करना है? (84) जमा करने में खुशी होती है ना? मेहनत तो नहीं लगती? क्यों नहीं मेहनत महसूस होती है?

〰✧ क्योंकि प्रत्यक्षफल भी मिलता है। प्रत्यक्षफल मिलता है कि भविष्य के आधार पर चल रहे हो? भविष्य से भी प्रत्यक्षफल अति श्रेष्ठ है। सदा ही श्रेष्ठ कर्म और श्रेष्ठ प्रत्यक्षफल मिलने का साधन है कि सदा ये याद रखो कि 'अब नहीं तो कब नहीं'। जैसे नाम है डबल फारेनर्स, तो डबल का टाइटिल बहुत अच्छा है। *तो सबमें डबल-खुशी में, नशे में, पुरुषार्थ में, सबमें डबल। सेवा में भी डबल। और रहते भी सदा डबल हो, कम्बाइन्ड, सिंगल नहीं। कभी डबल होने का संकल्प तो नहीं आता?* कम्पनी चाहिये या कम्पैनियन चाहिये? चाहिये तो बता दो। ऐसे नहीं करना कि वहाँ जाकर कहो कम्पैनियन चाहिये। कितने भी

कम्पैनियन करो लेकिन ऐसा कम्पैनियन नहीं मिल सकता। कितने भी अच्छे कम्पैनियन हो लेकिन सब लेने वाले होंगे, देने वाले नहीं। इस वर्ल्ड में ऐसा कम्पैनियन कोई है? अमेरिका, आस्ट्रेलिया, आफ्रीका आदि में थोड़ा ढूंढ कर आओ, मिलता है! क्योंकि मनुष्यात्मायें कितने भी देने वाले बनें फिर भी देते-देते लेंगे जरूर।

〰✧ *तो जब दाता कम्पैनियन मिले तो क्या करना चाहिये? कहाँ भी जाओ, फिर आना ही पड़ेगा। ये सब जाने वाले नहीं हैं। कोई कमजोर तो नहीं हैं? फोटो निकल रहा है। फिर आपको फोटो भेजेंगे कि आपने कहा था। कहो यह होना ही नहीं है। बापदादा भी आप सबके बिना अकेला नहीं रह सकता।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ अपने देह भान से न्यारा - जैसे *साधारण दुनियावी आत्माओं को चलते-फिरते, हर कर्म करते स्वतः और सदा देह का भान रहता ही है,* मेहनत नहीं करते कि मैं देह हूँ न चाहते भी सहज स्मृति रहती ही है।

〰✧ *ऐसे कमल-आसनधारी ब्राह्मण आत्मायें भी इस देहभान से स्वतः ही ऐसे न्यारे रहें* जैसे अज्ञानी आत्म-अभिमान से न्यारे हैं। है ही आत्म-अभिमानी।

शरीर का भान अपने तरफ आकर्षित न करें।

〰✧ जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, चलते-फिरते फरिश्ता रूप वा देवता रूप स्वतः स्मृति में रहा। ऐसे *नैचुरल देहीअभिमानी स्थिति सदा रहे - इसको कहते हैं देहभान से न्यारे।* देहभान से न्यारा ही *परमात्म-प्यारा* बन जाता है।

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

———————————————

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ बापदादा ने आप ब्राह्मण आत्माओं को परिवर्तन किस आधार पर किया? सिर्फ स्मृति दिलाई कि *आप आत्मा हो, न कि शरीर। इस स्मृति ने कितना अलौकिक परिवर्तन कर लिया! सब-कुछ बदल गया ना!* कितनी छोटी-सी बात का परिवर्तन किया कि तुम शरीर नही आत्मा हो - *इस परिवर्तन होते ही आत्मा मास्टर सर्वशक्तिवान होने कारण स्मृति आते ही समर्थ बन गई। अब यह समर्थ जीवन कितना प्यारा लगता है।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- उडती कला का अनुभव करना"*

➳ _ ➳ अमृतवेले आंख खुलते ही मैं आत्मा मीठे बापदादा को अपने सामने देखती हूँ... बापदादा बड़े प्यार से मीठे बच्चे- मीठे बच्चे कहकर मुझे जगाते हैं... बड़ी प्यार भरी दृष्टि दे रहे हैं... *बाबा के रूहानी नयन मुझ आत्मा को प्रभु प्यार में पूरी तरह लवलीन कर रहे हैं...* मैं आत्मा तहे दिल से अपने *मीठे बाबा का शुक्रिया करती हूँ... जिन्होंने मेरे जीवन में आकर जीवन रूपी बगिया को खुशियों से महका दिया है... बापदादा से होने वाली असीम स्नेह की वर्षा से मैं आत्मा भीगती जा रही हूँ...*

❉ *अपनी मीठी मीठी शिक्षाओं से मेरे जीवन का श्रृंगार करते हुए बाबा कहते हैं:-* "मीठे प्यारे बच्चे... उड़ती कला का श्रेष्ठ साधन जानते हो... *उड़ती कला का अनुभव करने के लिए एक शब्द का परिवर्तन करना है... वह एक शब्द है सब कुछ तेरा... मेरा शब्द को बदल कर तेरा कर देना है...* यह शब्द सदा के लिए लाइट बना देता है और डबल लाइट बन जाने से सहज उड़ती कला वाला बन जाते हैं..."

➳ _ ➳ *बाबा के मीठे बोल सुनकर गदगद होती हुई मैं आत्मा कहती हूँ:-* "मेरे प्राणेश्वर मीठे बाबा... आप हमें उड़ती कला में ले जाने की कितनी सहज युक्ति बता रहे हैं... अब मैं आत्मा हर *मेरे को तेरे में परिवर्तन* कर रही हूँ... *इस 'तेरा हूं' से आत्मा तो लाइट है ही और सब कुछ जिम्मेवारी तेरा कर देने से मैं हल्कापन अनुभव कर रही हूँ... डबल लाइट बन जाने से मैं आत्मा सहज

ही उड़ती कला में जा रही हूँ..."*

❉ *अपने श्रेष्ठ और महान ब्राह्मण कुल की स्मृति दिलाते हुए मीठे बाबा कहते हैं:-* "मीठे-मीठे फूल बच्चे... सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण कुल वाली आत्माओं का लक्ष्य है सदा महादानी और सदा पुण्य आत्मा बनना... *पुण्य आत्माएं कभी भी संकल्प में भी विकार के वश नहीं हो सकती... वे हर संकल्प में, बोल में, कर्म में सदा पुण्य आत्मा रहती हैं... जब पुण्य आत्मा बन गई तो पाप का नाम निशान भी नहीं रह सकता... तो सदा इसी स्मृति में रहो कि हम ब्राह्मण आत्माएं सदा की पुण्य आत्मायें हैं..."*

➳ _ ➳ *बाबा की शिक्षाओं को अपने जीवन में धारण करती हुई मैं आत्मा कहती हूँ:-* "सतगुरु मीठे बाबा... मैं आत्मा अब इसी स्मृति में स्थित हूँ कि *मैं सर्वश्रेष्ठ कुल वाली ब्राह्मण आत्मा हूँ... पुण्य आत्मा हूँ...* मैं आत्मा हर कर्म से पुण्य का खाता जमा करती जा रही हूँ... *हर आत्मा के प्रति सदैव श्रेष्ठ भावना और शुभ भावना रख रही हूँ... और अपनी पुण्य की पूंजी को बढ़ाती जा रही हूँ..."*

❉ *ज्ञान रत्नों से मेरा श्रृंगार करते हुए मीठे बाबा कहते हैं:-* "मेरे प्यारे बच्चे... पुण्य आत्माओं की निशानी जानते हो... पुण्य आत्मा कभी भी किसी भी आत्मा से *अल्पकाल की प्राप्ति की कामना नहीं रखती... वह कभी भी अपने पुण्य के बदले प्रशंसा लेने की कामना भी नहीं रखती...* वे सदा अपने *हर बोल द्वारा औरों को खुशी, बाप के स्नेह, अतींद्रिय सुख, रूहानी आनन्दमय जीवन का अनुभव कराते हैं... तो ऐसे पुण्य आत्मा बनो..."*

➳ _ ➳ *बाबा द्वारा कही गई एक एक बात का स्वरूप बनती हुई मैं आत्मा कहती हूँ:-* "नयनों के नूर मीठे बाबा... मैं आत्मा अपनी दातापन की स्थिति में स्थित हूँ... *हद की नाम मान शान की सभी कामनाओं से मुक्त हूँ... अपने हर बोल द्वारा आत्माओं को खुशी की खुराक दे रही हूँ... अपने हर कर्तव्य द्वारा सभी को सहयोग की अनुभूति करा रही हूँ... पुण्य आत्मा के सभी

लक्षण, निशानियाँ स्वयं में धारण करती जा रही हूँ..."*

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बेहद की विश्व सेवा की भावना रखना*"

➳ _ ➳ अपने प्यारे मीठे शिव बाबा द्वारा मिल रही अनन्त प्राप्तियों की स्मृति आते ही मन उनके प्रति अगाध स्नेह की भावना से भर उठता है और उनका सुंदर, सलोना निराकारी स्वरूप सहज ही आंखों के सामने आ जाता है और मन मे उनका असीम प्रेम पाने की इच्छा जागृत होने लगती है। *मेरी यह इच्छा मेरे संकल्पो के माध्यम से जैसे ही मेरे मीठे प्यारे शिव पिता तक पहुंचती है मेरे दिलराम शिव बाबा अपना धाम छोड़ कर सेकेंड में मेरे पास आ जाते हैं*। उनसे आने वाली शीतल किरणों की शीतलता मुझे उनकी उपस्तिथि का अहसास करवा रही है। *मैं स्पष्ट अनुभव कर रही हूँ उनकी शक्तिशाली किरणों में समाए उनके असीम स्नेह को, उनके निश्छल, निस्वार्थ प्यार को*।

➳ _ ➳ मेरे दिलाराम शिव बाबा के प्यार की मीठी सुखद फुहारें मन को अथाह सुख प्रदान कर रही हैं। इन फुहारों से मिल रहे असीम आनन्द का आकर्षण मुझे धीरे धीरे उनके समीप ले जा रहा है। *उनके प्रेम के सुखद एहसास की मीठी डोर में बंधी मैं आत्मा अब अपने साकारी तन से बाहर आ कर, उनके साथ साथ चल पड़ती हूँ ऊपर की ओर*। उनकी किरणों रूपी बाहों के झूले में झूलती, अतीन्द्रिय सुख में गोते खाती मैं उनके साथ चली जा रही हूँ। *देह और देह की दुनिया के हर आकर्षण से मुक्त, हर बंधन से आजाद सुख के सागर शिव बाबा से मिल रहे गहन सुख में समाई मैं पहुंच गई अपने शिव बाबा के साथ उनके धाम*।

➳ _ ➳ परमधाम में सुख, शांति के सागर अपने प्यारे मीठे शिव परम पिता परमात्मा के सानिध्य में मैं आत्मा उनसे आ रही सर्वशक्तियों को स्वयं में समाहित करती जा रही हूँ। *उनसे आ रही सर्वशक्तियों की असीम किरणे जैसे - जैसे मुझ आत्मा पर प्रवाहित हो रही हैं मुझे ऐसा लग रहा है जैसे सुख का झरना मुझ आत्मा के ऊपर बह रहा है और मैं असीम सुख से भरपूर होती जा रही हूँ*। असीम सुख की अनुभूति करके, स्वयं को सर्वशक्तियों से सम्पन्न करके मैं आत्मा परमधाम से नीचे अब सूक्ष्म वतन में आ रही हूं।

➳ _ ➳ अब मैं देख रही हूँ स्वयं को सफेद प्रकाश से प्रकाशित फरिश्तों की जगमग करती हुई दुनिया में। *सफेद चमकीली फरिश्ता ड्रेस धारण कर मैं फरिश्ता पहुँच जाता हूँ अव्यक्त वतन वासी अपने प्यारे ब्रह्मा बाबा के सामने जिनकी भृकुटि में शिवबाबा चमक रहें हैं*। बापदादा बड़े प्यार से निहारते हुए अपनी मीठी दृष्टि मुझ पर डाल रहे हैं। उनकी शक्तिशाली दृष्टि से मुझ फरिश्ते के अंदर परमात्म बल भरता जा रहा है जो मुझे शक्तिशाली बना रहा है। *सुख की अनन्त शक्तियां बाबा मुझ में प्रवाहित करके मुझे आप समान मास्टर सुख दाता बना रहे हैं*।

➳ _ ➳ विश्व की दुखी आत्माओं को सुखी बनाने की सेवा अर्थ अब बाबा मुझे निमित बना कर वापिस साकारी दुनिया में लौटने का निर्देश देते हैं। *सुख का फरिश्ता बन अब मैं सूक्ष्म लोक से नीचे आ जाता हूँ और विश्व की तड़पती हुई दुखी अशांत आत्माओं को सुख की अनुभूति करवाने चल पड़ता हूँ*। एक बहुत ऊंचे और खुले स्थान पर जाकर मैं फरिश्ता बैठ जाता हूं। और अपने सुख सागर परमपिता परमात्मा शिव बाबा के साथ कनेक्शन जोड़ कर उनसे सुख की शक्तिशाली किरणे लेकर सारे विश्व में सुख के वायब्रेशन फैलाने लगता हूँ।

➳ _ ➳ सारे विश्व मे सुख, शांति की किरणें फैलाता और सबको सुख शांति की अनुभूति करवाता हुआ मैं फ़रिशता अब अपने साकारी तन में आ कर प्रवेश कर जाता हूँ इस स्मृति के साथ कि बाबा ने मुझे निमित बना कर ईश्वरीय सेवा अर्थ इस भू लोक पर भेजा है। इस बात को सदा स्मृति में रख अब मैं

अपने जीवन को ईश्वरीय सेवा में सफल कर रही हूँ। *"मैं खुदाई खिदमतगार हूँ" इसलिए खुदा की खिदमत ही मेरे ब्राह्मण जीवन का कर्तव्य है। इसी स्मृति में स्थित हो कर अब मैं हर कर्म कर रही हूँ और अपने संकल्प, बोल और कर्म से अपने सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली हर आत्मा को परमात्म सुख का अनुभव करवाकर उनके जीवन को भी सुखदाई बना रही हूँ*।

———————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं लगाव के सूक्ष्म धागों को समाप्त कर उड़ती कला में उड़ने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सम्पूर्ण फरिश्ता आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव मन्सा द्वारा शक्तियों का दान देती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदा कर्म द्वारा गुणों का दान देती हूँ ।*
✺ *मैं महादानी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *सेवा में सफलता नहीं मिलती तो दिलशिकस्त मत बनो कुछ भी सेवा करो चाहे जिज्ञासू कोर्स वाले आवे या नहीं आवे लेकिन स्वयं, स्वयं से सन्तुष्ट रहो।* निश्चय रखो कि अगर मैं सन्तुष्ट हूँ तो आज नहीं तो कल यह मैसेज काम करेगा, करना ही है। इसमें थोड़ा सा उदास नहीं बनो। खर्चा तो किया.... प्रोग्राम भी किया.... लेकिन आया कोई नहीं। *स्टूडेन्ट नहीं बढ़े, कोई हर्जा नहीं आपने तो किया ना। आपके हिसाब-किताब में जमा हो गया* और उन्हों को भी सन्देश मिल गया। तो टाइम पर सभी को आना ही है, इसलिए करते जाओ। *खर्चा बहुत हुआ, उसको नहीं सोचो। अगर स्वयं सन्तुष्ट हो तो खर्चा सफल हुआ।* घबराओ नहीं, पता नहीं क्या हुआ!

➳ _ ➳ कई बच्चे ऐसे कहते हैं मेरा योग ठीक नहीं था, तभी यह हुआ। किससे योग था? और कोई है क्या जिससे योग था? *योग है और सदा रहेगा। बाकी कोई सीजन का फल है, कोई हर समय का फल है। तो अगर आया नहीं तो सीजन का फल है, सीजन आयेगी। दिलशिकस्त नहीं बनो।* क्योंकि श्रीमत को तो माना ना। श्रीमत प्रमाण कार्य किया। इसीलिए *श्रीमत को मानना यह भी एक सफलता है। बढ़ते जाओ, करते जाओ ।* और ही पश्चाताप करके आपके पांव पड़ेंगे कि आपने कहा हमने नहीं माना। यहाँ ही आप देवियां बनेंगी। आपके पांव पर पड़ेंगे, तभी तो भक्ति में भी पांव पड़ेंगे ना। तो वह टाइम भी आना है जो सब आपके पांव पड़ेंगे कि आपने कितना अच्छा हमारा कल्याण किया।

➳ _ ➳ *जिस समय थकावट फील हो ना तो कहाँ भी जाकर डांस शुरू कर दो।* चाहे बाथरूम में। क्या है इससे मूड चेंज हो जायेगी। चाहे मन की खुशी में नाचो, अगर वह नहीं कर सकते हो तो स्थूल में गीत बजाओ और नाचो। फारेन

में डांस तो सबको आता है। डांस करने में तो होशियार हैं। फरिश्ता डांस तो आता है। अच्छा।

✺ *ड्रिल :- "निश्चय और सन्तुष्टता से सेवा करने का अनुभव"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा सफलता का चमकता सितारा हूँ*... मैं आत्मा अपना फरिश्ता रूप धारण कर... उड़ कर पहुँच जाती हूँ... ज्ञान के सागर प्यारे बापदादा के पास... *उनसे ज्ञान की गुह्य से गुह्य बातों को अपने में धारण कर रही हूँ*... मैं आत्मा ज्ञान की देवी विश्व के ग्लोब पर विराजमान होकर... सारे विश्व की आत्माओं को... श्रेष्ठ ज्ञान का प्रकाश बांट रही हूँ...

➳ _ ➳ मैं ज्ञान का फरिश्ता बन कर पहुँच जाती हूँ बाबा के प्रोग्राम में... और वहाँ पर मैं आत्मा जिज्ञासुओं को कोर्स करवा रही हूँ... इसमें कोई रेग्युलर स्टूडेंट नहीं भी बनता है... तो मैं आत्मा *दिलशिकस्त नहीं होती हूँ... क्योंकि बाबा ने समझाया है कि बच्चे... जो सीजन का फल है वो सीजन में ही आता है*... और कोई सदाबहार यानी हर समय का फल है... तो अगर नहीं आया माना सीजन का फल है...

➳ _ ➳ मैं आत्मा अपनी सेवा श्रीमत के अनुसार कर रही हूँ... और *श्रीमत को मानना भी सफलता ही है*... और मैं आत्मा अपनी सेवा से सम्पूर्ण संतुष्ट हूँ... मुझे इस बात का सम्पूर्ण निश्चय है कि... *जो ज्ञान का बीज बोया है वो जरूर फलीभूत होगा...*

➳ _ ➳ मैं आत्मा अपनी सेवा करते हुए निरंतर आगे बढ़ती जा रही हूँ... बाबा ने कहा है कि *बच्चे ऐसा दिन आएगा की सभी भक्त आत्माएँ... आप देवियों के पांव पड़ेंगे*... और वह समय आ गया है... मुझ आत्मा के सामने कुछ आत्माएँ पश्चाताप कर रही है... और मेरे पास आकर खड़ी है... मुझसे कह रही है... *आप ने हमें सत्य मार्ग दिखाया था... लेकिन हमने नहीं माना*... आप ने हमारा कितना अच्छा कल्याण किया है... कि आप ने हमें अपने

परमपिता से मिला दिया... सारी भक्त आत्माएँ मेरा धन्यवाद कर रही है... और मैं बाबा का धन्यवाद कर रही हूँ कि... उन्होंने मुझ आत्मा को इतना ऊंचा उठा दिया...

➳ _ ➳ *मैं आत्मा दृढ़ निश्चय और सन्तुष्टता से सदा सफलता प्राप्त कर रही हूँ*... जब भी मैं आत्मा मैं थकावट महसूस करती हूँ... तो मैं आत्मा अपने मूड को चेंज करने के लिए... डांस करने लगती हूँ... या मन का डांस करती हूँ... या कोई अच्छा बाबा का गीत सुनती हूँ... जिससे मुझ आत्मा का मूड फट से चेंज हो जाता है... और थकावट भी नहीं रहती है... मैं आत्मा अब समझ चुकी हूँ... *सेवा में सदा सफलता के लिए... एक ही मंत्र है "बाबा में निश्चय और सेवा से सन्तुष्टता"*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔